International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का आभासी कक्षा परियोजना का अध्ययन

शोधार्थी, राजेश साहू
श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प्र
शोध निर्देशक, डॉ रिशिकेश यादव
श्री सत्य सॉई प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय सीहोर म.प

सारांश

शिक्षा केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही समाज को सशक्त नही बनाती वरन् मानव संसाधन का भी सर्वांगीण विकास भी करती है। शिक्षा ही आधुनिक समाज की मजबूत नींव है शिक्षा मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक है। मनुष्य अपने जन्म से मृत्यु तक शिक्षा प्राप्त करता है और यह प्रक्रिया पूर्ण जीवन चलती रहती है। प्रारम्भ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर–परिवार एवं समुदाय करते थे। तत्पश्चात् व्यक्ति औपचारिक साधनों जैसे विद्यालय, कॉलेज एवं युनिवर्सिटी से शिक्षा ग्रहण करता है।माध्यमिक शिक्षा ही विद्यार्थियों के भविष्य को निधा ंरित करती है किन्तु वर्तमान में माध्यमिक शिक्षा शिक्षा अपनी बुरे दौर से गुजर रही है। आज माध्यमिक स्तर की शिक्षा के विकास एव ं इसका स्तर स ुधारने के लिये हमारी सरकारों और अन्य सभी एजेन्सियों द्वारा काफी प्रयास किये जा रहे है फिर भी माध्यमिक शिक्षा का स्तर अभी तक अपने उच्चतम् सफलता की ओर अग्रसर नही हुआ है, नही ये प्रयास वास्तविक रूप में धरातल पर परिलक्षित हुए हैं। विद्यालय में छात्रों के लिए सीखने के अनुभवो ं और सृजित अवसरों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के माध्यम से उनका विकास निर्धारित किया जाता है।

1प्रस्तावना

भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली है। देश धन–धान्य से पूर्ण था और शोर्य तथा पराक्रम में अद्वितीय था। भारत में अपार धन–सम्पदा इसलिए थी कि देश ज्ञान–विज्ञान से संपुष्ट था। भारत का वैभव उसकी शिक्षा पद्धति के कारण था। आज शिक्षा को विकास से जोड़ा जा रहा है कहा जा रहा है कि वह राष्ट्र आर्थिक रूप से विकसित है जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। हम विभिन्न प्रकार के कौशलों को अर्जित करने के लिये सीखने का ही प्रयोग करते हैं।

1. शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य विद्यालयी विषयों में अर्जित ज्ञान या विकसित कौशाल का शिक्षक द्वारा परीक्षा प्राप्तांको या अंको द्वारा निर्दिष्ट करने से है। विद्यार्थियों ने किस सीमा तक अपनी योग्यताओं का विकास किया है, उसका आंकिक रूप म ं प्रस्तुीकरण ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि का सूचक है।

2. समायोजन :– लक्ष्य प्राप्ति के लिए व्यक्ति द्वारा अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थिति में वातावरण के साथ सांमजस्य पूर्ण व्यवहार समायोजन कहलाता है। यहां समायोजन से तात्पर्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो ं के शैक्षिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक समायोजन से है।

3. माध्यमिक विद्यालय :– ऐसे विद्यालय जिनमें कक्षा 9 व 10 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण करवाया जाता है, माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते है। यहां माध्यमिक स्तर में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को लिया गया है।

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

आभासी कक्षाकक्ष में, छात्र एक सीखने वाले समूह का एक सक्रिय सदस्य होता है, लेकिन जिस गति से समूह के अन्य लोग सीख सकते हैं, उससे अलग–अलग स्वतंत्र रूप से सीखते और समझते हैं। आभासी कक्षाकक्ष एक भौतिक स्थान के बजाय कक्षा के सदस्यों के बीच बातचीत के लिए एक 'आभासी सुविधा' प्रदान करता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और सीखना चारों ओर के परिवेश से अनुकूलन में सहायता करता है। किसी विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में कुछ समय रहने के पश्चात् हम उस समाज के नियमों को समझ जाते हैं और यही हमसे अपेक्षित भी होता है। हम परिवार, समाज और अपने कार्यक्षेत्र के जिम्मेदार नागरिक एवं सदस्य बन जाते हैं। यह सब सीखने के

कारण ही सम्भव है। हम विभिन्न प्रकार के कौशलों को अर्जित करने के लिये सीखने का ही प्रयोग करते हैं। परन्तु सबसे जटिल प्रश्न यह है कि हम सीखते कैसे हैं? आभासी कक्षा कक्ष प्रणाली अपने उपयोगकर्ताओं को दोहरा लाभ पहुंचाने का सामर्थ्य रखती है। अपनी इसी विशेषता और सामर्थ्य के फलस्वरुप आभासी कक्षा कक्ष प्रणाली विद्यार्थियों के लिए निम्न प्रकार से बहु उपयोगी सिद्ध हो सकती है

2समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का आभासी कक्षा परियोजना का अध्ययन भोपाल जिले के संबंध में । यह एक सर्वेक्षण प्रकार का अध्ययन है जो आभासी कक्षा का अध्ययन करने के लिए किया गया हैवीसीपी की वर्तमान स्थिति जैसे कई पहलुओं के साथ उच्च प्राथमिक विद्यालयों में परियोजना, इसकीछात्रों और शिक्षकों पर प्रभाव शिक्षकों द्वारा सामना की जाने वाली कार्यान्वयन में समस्याएं प्रधानाध्यापक और संबंधित डाइट–व्याख्याता छात्रों शिक्षकों प्राचार्यों की धारणाएं संबंधित व्याख्याता आदि वर्तमान अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मुख्य रूप से आवृत्ति प्रतिशत और ची–वर्ग की सहायता से विधिवत डेटा एकत्र और विश्लेषण किया गया था विश्लेषण किए गए डेटा यहां तालिका में प्रस्तुत किए गए हैं, जिसके बाद विवरण और व्याख्या किया गया है।

3आभासी कक्षा कक्ष व्यवस्था की कमियां एवं सीमाएं

किसी भी वस्तु या प्रक्रिया का अपने सही वास्तविक रूप में उपस्थित रहकर क्रियाशील ना होना ही अपने आप में उसकी कमी तथा सीमाओं की ओर इशारा करने में काफी रहता है।

1. इसका लचीलापन छात्रों को गुमराह कर सकता है और वह इससे नाजायज फायदा उठाने की कोशिश भी कर सकते हैं। छात्रा अपनी शक्ति और समय को निरुद्देशीय कार्यों में खर्च कर सकते हैं।
2. प्रायः यह देखा जाता है कि आभासी कक्षा कक्ष व्यवस्था के संगठन और प्रबंधन में अधिगम सामग्री और विद्यार्थियों को उसे प्रदान करने के तरीकों की गुणवत्ता में काफी असंदिग्धता रहती है। इस कार्य हेतु जो फैकल्टी नियुक्त की जाती है वह अपने कर्तव्यों के निर्वाह में समुचित रूप से सक्षम नहीं पाई जाती है।
3. ऐसी कोई भी आभासी कक्षा नहीं हो सकती है जिसमें वास्तविक कक्षा शिक्षण के जीवित अनुभव, अंतः क्रिया तथा संबंधों की गुणवत्ता, सामाजिकता तथा अंतरंगता पाई जाए।
4. विद्यालय शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। ऐसी कक्षा में हम विद्यार्थियों को सब कुछ नहीं दे पाते जिसके माध्यम से उसके शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा नैतिक विकास को उचित आधार तथा दिशा प्राप्त हो, उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके।

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि आभासी कक्षा कक्ष व्यवस्था में काफी कमियां हैं, जिनकी वजह से वर्तमान या कक्षा शिक्षण व्यवस्था का अंग बनाना या उसकी जगह इसे लागू करना संभव नहीं है, परंतु यह भी सत्य है कि इस व्यवस्था में इतना सामर्थ्य है कि वह सबके लिए शिक्षा तथा सबके लिए बिना भेदभाव की एक जैसी तथा बेहतरीन शिक्षा, जैसे सुनहरे सपनों को साकार कर देश की प्रगति में पूरा पूरा योगदान दे सकती है। खुले दिल से स्वीकार करना चाहिए और आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

4शोधकीपरिकल्पना

सामान्यतः अनुसंधान की तीन विधियां निम्नवत है ं–

• **ऐतिहासिक विधि** (ऐतिहासिक अनुसंधान का सम्बन्ध भूतकाल से है। यह भूतकाल का विश्लेषण करता है तथा इसका उद्देश्य भूतकाल के आधार पर वर्तमान का ं समझना तथा भविष्य के लिये तैयार होना है।)

• **प्रयोगात्मक विधि**(प्रयोगात्मक अनुसंधान इस तथ्य का स्पष्टीकरण करता है कि जब सभी सम्बन्धित चरों अथवा परिस्थितियों पर सावधानीपूर्वक नियन्त्रण करके प्रयोगात्मक चर में नियन्त्रण किया जाय तो क्या निष्कर्ष प्राप्त होगा।)

• **वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि** (वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि में परीक्षणों के द्वारा प्रतिदर्शों से आंकड़े एकत्र करना तथा वर्तमान स्थिति का निर्धारण करना है।) वर्णनात्मक अथवा सर्वेक्षण विधि अतीत में जो कुछ भी विद्यमान था उसकी योजना, उसका वर्णन करना एवं उसकी व्याख्या करना ऐतिहासिक अनुसंधानों का कार्य है परन्तु कुछ ऐसे अनुसंधान है ं जो वर्तमान तथ्यों का अध्ययन एवं व्याख्या करते हैं, इसमें वर्णनात्मक अनुसंधान प्रमुख है। करलिंगर के शब्दों में, सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक, वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत व्यापक तथा कम आकार वाली जनस ंख्याओं का अध्ययन उनमें से चयनित प्रतिदर्शों के आधार पर इस आशय से किया जाता है

वर्णनात्मक अनुसंधान की विशेषता

• इस अनुसंधान विधि के द्वारा हम अधिक व्यक्तियों के विषयों के आंकड़े एक ही समय में प्राप्त करते हैं।

•इस अनुस ंधान विधि का सम्बन्ध सम्पूर्ण जनस ंख्या या उसके चयनित न्यादर्श से होता है, न कि व्यक्ति विशेष से।

•इस अनुस ंधान विधि के तहत शोधकर्त्ता चयनित शोध समस्या पर ही अध्ययन कार्य सम्पादित करता है।

प्रस्तुत अध्ययन के लिये शोधार्थी द्वारा भोपाल संभाग (मध्य प्रदेश) के फंदा एवं बेरासियाके माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् कक्षा 9वीं एवं 10वीं के 13 आयु वर्ग के छात्र एवं छात्राओं को जनसंख्या के रूप में चुना गया जिनकी संख्या लगभग 10,913 है।

न्यादर्श

जब किसी जनसंख्या में से किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिये उसकी कुछ एक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस च ुनने की किया को न्यादर्शन (Sampling) कहते हं तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। डेमिंग (1984) के अनुसार प्रतिचयन सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र का केवल एक अंश मात्र ही नहीं है बल्कि प्रतिचयन वह कला तथा विज्ञान है जिसकी सहायता से उपयोग में लाये जाने वाले आँकड़ों की विश्वसनीयता को प्रसम्भाव्यता सिद्धान्त के द्वारा नियंत्रण में रखा जा सकता है तथा उसका मापन भी किया जा सकता है।

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

5अनुसंधानक्रियाविधि

जैसा कि वर्तमान अध्ययन विस्तृत जानकारी एकत्र करने के लिए आयोजित किया गया था मौजूदा वर्तमान परिस्थितियों को सही ठहराने के लिए डेटा को नियोजित करने के इरादे से घटनाएँ सर्वेक्षण विधि प्रस्तुत अध्ययन को क्रियान्वित करने में अनुसंधान का प्रयोग किया गया है। सामान्य या वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध किसी दी गई घटना की वर्तमान स्थिति के विवरण की ओर उन्मुख होते हैं। शोधार्थिनी द्वारा वर्तमान शोध अध्ययन हेतु भोपाल संभागकेफंदाएवं बेरासिया विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालयों का चयन अनियमित न्यादर्श विधि द्वारा किया गया जिनमें से सरकारी धमंतोडी (कक्षा 1 से 8) संदीपन गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल सरकारी एमएस अरवालिया (कक्षा 1 से 8) सरकारी एमएस अमझरा (कक्षा 1 से 8) शासकीय शुभाष प्राथमिक शाला बालक बसई संदीपन गवर्नमेंट सेकेंडरी स्कूल शासकीय मध्य विद्यालय करारिया नई का चयन किया गया।

तालिका संख्या–1: भोपाल संभाग के अंतर्गत विकास खंड

भोपाल संभाग के अंतर्गत विकास खंड	
विकासखण्ड का नाम	फंदा
	बेरासिया

तालिका संख्या–2: चयनित जनसंख्या

s.no	**अध्ययन हेतु चयनित जनस ंख्या**
1	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वीं एवं 10वीं के 13 + आय ु वर्ग के समस्त छात्र
2	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वीं एवं 10वीं की 13 + आयु वर्ग की समस्त छात्रायें
3	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के गैर सरकारी विद्यालय के कक्षा कक्षा 9वी ं एवं 10वीं के 13 + आयु वर्ग के समस्त छात्र
4	माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् के गैर सरकारी विद्यालय के कक्षा 9वीं एवं 10वीं की 13 + आयु वर्ग की समस्त छात्रायें

तालिका संख्या–.3 कम्प्यूटर अभिवृत्ति

Computer attitude	Students	N	M	SD	T value	Remark
Govt.& Private Sec. Level	Male	310	77.96	8.05	3.23	significant
	Female	320	76.30	8.76		

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

तालिका संख्या–4 व्यक्तित्व गुण

Personality Trait	Data of Secondary School Male & Female students	
Activity	276	275
Passivity	21	35
Enthusiastic	273	278
Non-Enthusiastic	26	22
Assertive	210	199
Submissive	87	101
Suspicious	103	127
Trusting	196	172
Depressive	103	126
Non-Depressive	199	181

6आंकड़ों का विष्लेषण (Analysis of Data):

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत्छात्र–छात्राओं का कम्प्यूटर अभिवृत्ति स्तर निम्न प्रकार पाया गया।माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की कम्प्यूटर अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

7निष्कर्ष

तालिका सख्या–4 में सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं के कम्प्यूटर अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मध्यमान 77.96 एवं 76.30 तथा मानक विचलन मान 8.05 एवं 8.76 की गणना की गयी। दोनों समूहों के टी–अनुपात की गणना करके टी–मान 3.23 प्राप्त हुआ, जो कि सारणीयन मान 0.05 सार्थकता स्तर एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 1.96 एवं 2.59 से अधिक है अतः दोनों ही सार्थकता स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। H2.0 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की विभिन्न व्यक्तित्व गुणों के आधार पर कम्प्यूटर अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है। H2-1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सक्रियता–निष्क्रियता (Activity Passivity)व्यक्तित्व गुण वाले छात्रों के कम्प्यूटर अभिवृत्ति के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

संदर्भ सूची :

[1] Gupta, K. A. and Baliya, J. N.(1991). “Components of Computer Education” , Journal – The Primary Teacher, Vol. 16, No. 1, pp. 20-22. January.

[2] Francis, L.; Katz, Y.J. and Evans, T. (1996) “The relationship between personality attitude towards computer an investigation among female undergraduate students” in Israel, British,Journal of Education and technology 27 : 3 PP 161-170

© 2023, IRJEdT Volume: 05 Issue: 02 | Feb-2023

[3] अग्रवाल, वाई.पी. (2000) : सांख्यिकी विधियाँ, स्ट्रेलिंग पब्किेशन प्रा.लि., नई दिल्ली।

[4] बेस्ट, जॉन डब्लयू (1963) : रिसर्च इन एज्यूकेशन, प्रेन्टीस हॉल ऑफ इण्डिया प्रा0लि0, नई दिल्ली।दबू, भावेा चन्द्र (2011) : ''विद्यार्थियो ं की शैक्षिक उपलब्धि पर शैं क्षक अभिप्रेरणा तथा समायोजन पर प्रभाव, आधुनिक भारतीय शिक्षा, वर्ष 31, अंक 3 जनवरी 2011, पेज 89–95

[5] कुमार सुभाष, चौ0 चरणसिंह विश्वविद्यालय मेरठः उच्चत्तर माध्यमिक विद्यार्थियों की अधिगम की समस्याओं में शैक्षिक अभिप्र`रणा का उनकी अध्ययन आदत, समायोजन तथा श`क्षिक–उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, 2009

[6] अध्ययन आदत एवं आत्म विश्वास का प्रभाव, 2011

[7] Archana KP (2002). Correlates of Academic Achievement. Indian J.Educ. Res. 21:75-76.Ed. Cairns and Christopher Alan Lewis (2002). Collective Memories, Political Violence

[8] Creativity–Intelligence, Academic Stress and Mental Health. Journal of Community Guidance and Research, vol.20 (1), 41-47.

[9] कुमार एस0 के0, केरल यूनिवसि ́टीः फैक्टस ́ इनफ्लुएंसि ंग एल्कोहॉलिक्स एण्ड ड्रग एडिक्सन अमंग इन कॉलेज स्टूडेंट्स इन केरल, 1992 ग ु प्ता ए0, पंजाब यूनिवसि ́टीः पस ́नैल्टी एण्ड मेंटल हैल्थ कॉनकोमिटेंट ऑफ रिलीजियसनेस इन द तिब्बतन स्टूडेंटस इन एडोलिस ेंट ऐज ग्ुप, 1980

[10] ग ुप्ता एस0पी0, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, सांख्यिकीय विधिया ं, 2020

[11] जाफरी सदाफ, अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढः माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक–उपलब्धि पर पारिवारिक माहा`ल, मानसिक स्वास्थ्य,

[12] त्यागी , गुरसरन दास (2012) . भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं विकास , आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।

[13] चतुर्वेदी , बादल (2011). उत्तर प्रदेश 2011, लखनऊः भारत बुक सेन्टर।

[14] बाजपेयी , एल . बी . (2000). भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक प्रवृत्तियाँ , लखनऊः आलोक प्रकाशन।

[15] पाल , राम बहादुर (2016). स्ववित्त पोषित अध्यापक शिक्षा संस्थाओं में भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की स्थिति एवं उपयोग का अध्ययन , शोध एवं अध्ययन , शिक्षा विभाग , इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

[16] वशिष्ठ , के 0 के 0 (2016). विद्यालय संगठन एवं भारतीय शिक्षा की समस्यायें , मेरठः लायल बुक डिपो।

[17] . सिंह , अरूण कुमार (2003) . मनोविज्ञान , समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ , दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।

[18] त्रिपाठी , केसरी नन्दन एवं आलोक कुमार (2012). उत्तर प्रदेशः एक समग्र अध्ययन , इलाहाबादः बौद्धिक प्रकाशन।

[19] गुप्ता , आर . (2012). हरियाणा सामान्य ज्ञान – एक परिचय , नई दिल्लीः रमेश पब्लिशिंग हाउस ।